‘स्वच्छता ही सेवा’ कार्यक्रम के अवसर पर माननीय राज्यपाल महोदय का सम्बोधन

(दिनांक 02 अक्टूबर, 2024)

जय हिन्द!

‘स्वच्छता ही सेवा’ कार्यक्रम के अवसर पर यहां पर उपस्थित स्वच्छता के प्रति जागरूक नागरिकों के मध्य पहुँचकर मुझे अपार खुशी और गर्व की अनुभूति हो रही है।

साथियों,

स्वच्छता हमारे जीवन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है, जो न केवल हमारे स्वास्थ्य को सुरक्षित रखने में सहायक होती है बल्कि हमें एक बेहतर और स्वस्थ वातावरण भी प्रदान करती है। स्वच्छ वातावरण में रहने से हम बीमारियों से बचे रहते हैं और यह हमारे मानसिक और शारीरिक विकास में सहायक होती है।

आज हम सभी यहां ‘स्वच्छता ही सेवा, 2024’ कार्यक्रम के निमित्त एकत्र हुए हैं। महात्मा गांधी जी ने स्वच्छता को स्वतंत्रता से अधिक महत्वपूर्ण माना था। आज के दिन गांधी जी की जयंती के सुअवसर पर मैं आप सभी से स्वच्छता के प्रति जागरूक होने का आग्रह करता हूँ।

17 सितंबर से शुरू हुए ‘स्वच्छता ही सेवा अभियान’ में स्वच्छता और पर्यावरण स्थिरता पर विशेष जोर दिया गया है। इस अभियान की शुरुआत औपचारिक स्वच्छता शपथ

और 'एक पेड़ माँ के नाम' वृक्षारोपण अभियान के साथ हुई। इसका उद्देश्य सामुदायिक सहभागिता को बढ़ावा देना और पर्यावरण संरक्षण को बढ़ावा देना है।

साथियों,

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी का स्वच्छता के प्रति संदेश बहुत प्रेरणादायक है। उन्होंने देश के नागरिकों से आह्वान किया है कि स्वच्छता केवल सरकार की जिम्मेदारी नहीं है, बल्कि यह हर नागरिक का कर्तव्य है। स्वच्छता केवल सफाई तक सीमित नहीं है, बल्कि यह समाज और देश के विकास से भी जुड़ी है। स्वच्छता से स्वस्थ जीवन, स्वच्छ पर्यावरण और सशक्त राष्ट्र की परिकल्पना साकार होती है।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने स्वच्छता को देश के विकास में अहम भूमिका बताया है। 2 अक्टूबर 2014 को 'स्वच्छ भारत मिशन' की शुरुआत करते हुए उन्होंने कहा कि स्वच्छता न केवल हमारे समाज की बुनियादी आवश्यकता है, बल्कि यह आर्थिक और सामाजिक विकास के लिए भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। मेरा अनुरोध है कि हर व्यक्ति इस मिशन में सहयोग दे, ताकि भारत को स्वच्छ और स्वस्थ राष्ट्र बनाया जा सके।

मेरी सोच है कि स्वच्छता के प्रति जागरूकता पैदा करने के लिए हर व्यक्ति को खुद से शुरुआत करनी होगी और दूसरों को भी प्रेरित करना होगा। ये तय है कि जब हर

भारतीय इस अभियान में शामिल होगा, तब ही हम अपने सम्पूर्ण देश को स्वच्छ और स्वस्थ बना सकेंगे।

साथियों,

स्वच्छता से स्वास्थ्य बेहतर होता है, जिससे देश की कार्यशीलता बढ़ती है। गंदगी से फैलने वाली बीमारियों पर नियंत्रण करके, स्वास्थ्य सेवाओं पर होने वाले खर्च को भी कम किया जा सकता है। जब लोग स्वस्थ रहेंगे, तो वे अधिक उत्पादनशील होंगे, जिससे देश की अर्थव्यवस्था सशक्त होगी।

स्वच्छता को मैं महिलाओं की गरिमा और बच्चों के भविष्य से भी जोड़कर देखता हूँ। स्वच्छ शौचालय की उपलब्धता से महिलाओं और बच्चियों की सुरक्षा और शिक्षा के अवसर बढ़ते हैं। इसके अलावा, स्वच्छ पर्यावरण पर्यटकों को भी आकर्षित करता है, मेरा मानना है कि स्वच्छता केवल सरकारी कार्यक्रम नहीं, बल्कि एक जन आंदोलन होना चाहिए, जो देश के विकास का मार्ग प्रशस्त करेगा।

आज, हम राजभवन परिसर में 'प्लास्टिक बैंक' का शुभारम्भ कर रहे हैं। मैं समझता हूँ कि यह पहल न केवल प्लास्टिक कचरे को कम करने में सहायक होगी, बल्कि इसे एक संसाधन के रूप में पुनः उपयोग करने के लिए भी प्रोत्साहित करेगी।

साथियों,

प्लास्टिक प्रदूषण आज हमारे पर्यावरण के लिए सबसे बड़ी चुनौतियों में से एक है। यह हमारी नदियों, समुद्रों, कृषि भूमि और तमाम जगहों को दूषित कर रहा है और हमारे स्वास्थ्य पर भी गंभीर प्रभाव डाल रहा है। प्लास्टिक बैंक का उद्देश्य इस चुनौती से निपटने के लिए एक सकारात्मक दृष्टिकोण प्रस्तुत करना है, जिससे हम प्लास्टिक को एक संसाधन में परिवर्तित कर सकें और उसे पुनरूचक्रण की प्रक्रिया में शामिल कर सकें।

इस अवसर पर, मैं सभी नागरिकों से आग्रह करना चाहता हूँ कि वे प्लास्टिक का प्रयोग कम से कम करें और प्लास्टिक कचरे का सही निपटान सुनिश्चित करें। हम सभी को अपने घरों, कार्यालयों, और सार्वजनिक स्थलों पर स्वच्छता बनाए रखने के लिए सक्रिय भूमिका निभानी चाहिए। स्वच्छता केवल एक व्यक्तिगत जिम्मेदारी नहीं है, बल्कि यह हमारे समाज और पर्यावरण के प्रति हमारी सामूहिक जिम्मेदारी है।

स्वच्छ भारत अभियान– का उद्देश्य केवल आसपास की सफाई करना ही नहीं है अपितु नागरिकों की सहभागिता से अधिक से अधिक पेड़ लगाना, कचरा मुक्त वातावरण बनाना, शौचालय की सुविधा उपलब्ध कराकर एक स्वच्छ भारत का निर्माण करना है। देश में पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए स्वच्छ भारत का निर्माण करना अत्यंत महत्वपूर्ण है।

मेरा मानना है कि 'स्वच्छ भारत' का सपना तभी साकार होगा जब हम सभी मिलकर इस दिशा में ईमानदारी से प्रयास करेंगे। गांधी जी के जीवन आदर्शों को अपनाते हुए, हमें न केवल अपने परिवेश को स्वच्छ रखना है, बल्कि अपने विचारों और कार्यों में भी स्वच्छता लानी है।

प्लास्टिक बैंक की इस पहल से हम एक कदम और आगे बढ़ रहे हैं, जहां स्वच्छता और पुनरूचक्रण के माध्यम से हम एक हरित और समृद्ध भविष्य की ओर अग्रसर होंगे।

आइए, हम सभी इस संकल्प को लें कि हम न केवल अपने घरों और आस–पास के क्षेत्रों को स्वच्छ रखेंगे, बल्कि पर्यावरण संरक्षण और स्वच्छता को अपने जीवन का अभिन्न अंग बनाएंगे।

जय हिन्द!